

## पुनः ब्रजयात्रा

ब्रजभूमि भक्ति की भूमि है । श्री बरसाना, नन्दगाँव, गोवर्धन आदि भाव के पर्वत है । इनपर अखिल रसामृतमूर्ति श्रीयुगलसरकार क्रीड़ा करते हैं । इन्हीं के शृंगार, सख्य और वात्सल्य रसों का प्रकाश होता है । बरसाना श्रीराधारानी की राजधानी है और श्रीवृन्दावन क्रीड़ा उपवन । वह महल है, यह निकुंज । बरसाने का मूलरूप बरसानु अथवा वृषभानु पर्वत है । श्रीप्रियाजी के मन में नन्दगाँव की और उचक कर देखने का जो भाव है, वही मानों बरसाने की ऊँचाई है । नन्दगाँव के सम्बन्ध में भी यही बात है । युगलसरकार अपने-अपने महल से ही नीलाम्बर और पीताम्बर का झण्डा दिखाते और कभी प्रेमसरोवर, कभी संकेतवट और कभी द्वैमिलवन में मिलने के लिये अभिसार करते । यहाँ का एक-एक वृक्ष, लता, कुंज, पाँति के पाँति कदम्ब, श्याम-तमाल, लता-निकुंज, पशु-पक्षी, घास-पात, तृण, धूलि-कण, सभी रससे सराबोर हैं । रस बरसाते हैं । सभी बरसने हैं, बरसाने हैं ।

श्रीभक्तकोकिलजी श्रीअवध से श्रीबरसाने आये । बरसाने की परम उदार प्रेमदात्री देवी का आकर्षण उनको खींचता ही रहता था । ब्रज की सीमा में प्रवेश करते ही सवारी छोड़कर ब्रजभूमि की वन्दना की, फल-फूल की भेंट रखी । यह कोई नई बात न थी । श्रीस्वामीजी बोले-‘श्रीअयोध्या ऐश्वर्यभूमि है, ब्रज माधुर्यभूमि । वहाँ धर्म है, मर्यादा है । यहाँ रस है, राग है ।

वहाँ यश है, मान मर्यादा है, प्रभुता है, नाम का कोलाहल है ।  
यहाँ तो बदनामी है, मान का निवारण है । कोई नियम नहीं है ।  
वन-वन घूमते हैं । गायें चराते हैं । कर नहीं लेते, चोरी ही  
करते हैं । प्रेम का मौन है । बरसाने के सरस दर्शन से श्रीभक्त-  
कोकिलजी की रग-रग अनुराग की भाँग पीकर उछलने लगी ।  
आनन्द के बादल घने होकर बरसने लगे । ब्रज की वृक्षावली उन्हें  
बहुत प्यारी लगती । सारा का सारा दिन जंगलों में ही मंगल  
मनाते । नहर में नहाते । सत्संग कथा, नाम कीर्तन आदि के रूप  
में प्रभु गुणगान करते । रात दिन का पता न चलता ।

एक दिन श्रीस्वामीजी एक सेवक के साथ विचरण करते  
हुए दूर वन में चले गये । ध्यानमग्न होने के कारण सन्ध्या का  
पता न चला । रात अँधेरी थी । रास्ता बदल गया । अब किधर  
जायँ ? एक मोर आकर सामने खड़ा हो गया । श्रीस्वामीजी ने  
सेवक से कहा-‘यह मोर मुकुटधारी, मयूरलास्यविहारी, साँवरे  
सलोने ब्रजराजकुमार ही हैं । आओ, इनके पीछे-पीछे चलें ।’  
मोरजी महाराज निवासस्थान पर पहुँचाकर अन्तर्धान हो गये ।

बरसाने में ही एक दिन रात्रि के समय श्रीभक्तकोकिलजी  
अष्टसखियों के मन्दिर में शयन कर रहे थे । गरमी के दिन थे,  
इसलिए दो भक्त पंखा झल रहे थे । निस्तब्ध निशीथ में उन्होंने  
देखा कि दिव्य रासमण्डल प्रकट हो गया है । प्रत्येक गोपी के  
साथ एक-एक श्यामसुन्दर हाव-भाव, विलासपूर्ण रासनृत्य कर  
रहे हैं । यह अप्राकृत आनन्द देखकर दोनों सेवक मुग्ध हो गये ।

थोड़ी देर बाद एक बच्चा रोने लगा । श्रीस्वामीजी की नींद न खुल जाय-इस डर से उसकी माँ बच्चे को लेकर रासमण्डल के बीच से निकल गयी । बस, रासमण्डल छिप गया । एक गोपी ने भयंकर रूप धारण करके भक्तों को डराया । उनके डरने की आवाज सुनकर सब जग पड़े और रोने लगे । श्रीस्वामीजी उठे और सब बातें पूछीं । श्रीस्वामीजी ने कहा-‘रास में विघ्न डालने से रक्षा में नियुक्त सखी ने ऐसा किया है । ब्रज में सदा ऐसी रास लीलाएँ होती हैं । भगवद्कृपा से किसी भाग्यवान् को यह दर्शन प्राप्त होता है ।’

एक दिन श्रीस्वामीजी बरसाने के आसपास के वन में घूम रहे थे । उन्होंने देखा कि युगल सरकार के नन्हें-नन्हें सुन्दर-सुन्दर दिव्य रेखाओं से अंकित चरणचिन्ह हैं । श्रीस्वामीजी ने और भक्तों को बुलाकर दर्शन कराया । बहुत दूर तक एक दूसरे से मिले हुए चले गये थे । श्रीस्वामीजी ने कहा-‘युगलसरकार ने रातभर यहाँ दिव्य क्रीड़ा की है । अन्तर्दृष्टि से देखने पर ये सूर्य के समान चमकते हुए नजर आते हैं ।’ उस समय कुछ भक्त घरपर थे । श्रीस्वामीजी एक स्थान पर युगल सरकार के चरण चिन्हों को टोकरी से ढँक दिया और उन्हें घर से बुलवाया; परन्तु जब वे आये तब उन्हें कुछ नहीं दिखा ।

श्रीभक्तकोकिलजी को नन्दगाँव के भोले-भाले ब्रजवासी बहुत प्यारे लगे एक दिन उन्होंने किसी ब्रजवासी से पूछा-‘तुम लोग अपनी दूध, दही माखन आदि वस्तुएँ ढक की क्यों नहीं

रखते ?’ उन्होंने कहा-‘हमारी हर एक वस्तु लाला कन्हैया खाता है । ढँक होगी तो उसे ढक्कन उतारना पड़ेगा । खुली हुई वस्तु सहज ही दिख जायेगी । हम तो रोज ही यह अनुभव करते हैं कि आज लाला ने खायी कि नहीं ? लाला के खा लेने का स्वाद ही और होता है । जो चीज़ हमें नहीं भाती, समझ जाते हैं कि आज लाला ने नहीं खाया ।’

नन्दगाँव में श्रीभक्तकोकिलजी अपने समय का अधिकांश उद्धवक्यारी में ही व्यतीत करते । वहाँ पाँति के पाँति कदम्ब वन लतायें अत्यन्त अद्भुत हैं । भक्तलोग वहाँ जाकर गोपियों के विरह की अवस्था का स्मरण करके बहुत व्याकुल होते । एक दिन हरी-भरी वृक्षावली में घूमते-घामते बहुत देर हो गयी श्रीभक्तकोकिलजी को बहुत भूख लगी । उसी समय एक गोपी सिर पर छाक लिये उधर से निकली । श्रीस्वामीजी ने उसे बुलवाया और कहा कि मुझे रोटी खिलाओ । उसने बड़े प्रेम से रोटी और छाक खिलायी । श्रीस्वामीजी के मन में यह भाव हुआ कि श्रीयशोदामैया ने ही यह छाक भेजी है ।

एक दिन रात्रि के समय श्रीस्वामीजी वनों में विचरण कर रहे थे । उन्होंने देखा कि एक छोटा सा बालक अँधेरी रात में वन में अकेला ही घूम रहा है । स्वामीजी ने पूछा-‘तुम्हें अकेले डर नहीं लगता ?’ वह बोला-‘कन्हैया भैया तो हमारे साथ ही हैं, डर काहे का ?’

होरी के दिनों में स्वामीजी एक बगीचे में घूमने के लिये गये । वहाँ देखा तो सब लाल-ही-लाल । पृथ्वी, वृक्ष, लतायें सभी मानों गुलाल से रंग दिये हों । श्रीस्वामीजी ने कहा-‘देखो श्यामसुन्दर ने कैसी होरी खेली है ? अपनी प्रेम-पिचकारी से इतना रंग उलीचा है कि सब कुछ रंग गया है । श्रीस्वामीजी होरी के पद गाने लगे -

रंग उमंग समोई रहे रस-भोई रहे ब्रज की यह गोरी ।  
शीलसनेहसनी सरसानी रहे, सदा-राधिकाश्याम की जोरी ॥  
बाल गुपाल विहार करे नित कुंजकुटीर छये ब्रजखोरी ।  
पौरी सदा रंग घोरीर हे-चिरजीवी रहे ब्रज की यह होरी ॥

सब सत्संगी मस्त हो गये । उनके सामने श्रीयुगल सरकार की दिव्य होरी की छटा छा गई । श्रीस्वामी जी कितनी ही बार श्रीनन्दगाँव, बरसाने में दो-दो तीन-तीन महीने तक रहे । कई बार सत्संगियों को दिव्य अनुभव भी हुए । एक सत्संगी ने देखा कि एक गूजरी पानी भरकर आ रही है और श्यामसुन्दर उनके साथ खींचातानी, धर पकड़ करते हुए उलझ रहे हैं ।

दूसरे सेवक ने उद्धवक्यारी में नामसंकीर्तन की ध्वनि में मस्त होकर देखा कि एक कदम्ब के वृक्ष पर हृदयहारी हिंडोला पड़ा हुआ है उस पर श्रीयुगलसरकार झूल रहे हैं और सखियाँ

कजली गा-गाकर झोटा दे रही है । श्रीभक्तकोकिलजी को यहाँ क्या-क्या अनुभव हुआ, यह किसी को नहीं मालूम ।

श्रीगिरिराज गोवर्धन भी अपने सुहाग-भाग से भरपूर होकर अचलरूप से विराजमान हैं । इन्होंने श्रीब्रजराजकुमार का सर्वांग स्पर्श प्राप्त किया है । आपने अपने झरने के जल से पाँव पखारा है, स्नान कराया है, मुँह धुलाया है । प्यास बुझाने के बहाने उनके अन्तर्देश में भी प्रवेश किया है । अपनी शिलाओं पर श्यामसुन्दर को बैठाया है, टहलाया है, सुलाया है और खिलाया है । अपनी हरी-हरी घास से, पत्ते से, पुष्प से आसन बनाया है, सेज बिछायी है । अंग-अंग का श्रृंगार किया है । अपने गुग्गुलु से धूप दी है । अपनी मणि से आरती उतारी है और अपनी धातुओं से उनके कपोलों पर चित्रकारी की है । विशाल भाल पर गोरोचन से तिलक किया है । उनके तलवे के नीचे भी रहे और छत्र बनकर सिरपर भी । उनके हाथ के खिलोने बने । ब्रजवासियों के पूजा करते समय तो श्यामसुन्दर उनका रूप धारण करके उनका हक हिस्सा भी चट कर गये । वात्सल्य में गोवर्धन क्रीड़ा, सख्य में गोवर्धन क्रीड़ा और श्रृंगार में भी गोवर्धन क्रीड़ा । गोपियों का वक्षःस्थल देखकर भी श्याम सुन्दर को श्रीगिरिराज की स्मृति हो आती ।

श्रीगिरिराज गोवर्धन का दर्शन करके श्रीभक्तकोकिलजी अत्यन्त हर्षित हुए । श्रीहरदेवजी के मन्दिर में घण्टों तक बैठे रहते । मानसीगंगा के तटपर बैठकर हलकी-हलकी लहरों को

देखते और मछलियों को आटे की गोली खिलाते । एक दिन दो दिव्य पक्षियों के दर्शन हुए । एक गौर था, दूसरा श्याम । श्रीस्वामीजी ने कहा-‘यह युगलसरकार ही पक्षियों का रूप धारण करके ब्रजभूमि में आनन्द क्रीड़ा कर रहे हैं ।’

श्रीस्वामीजी भक्तों के साथ ब्रजरज मस्तक पर धारण करते और भावमग्न होकर ब्रजरज में लोटपोट होते और गाते-

ब्रजरजरानी मेरी रक्षा करो ।

श्रीमैथिलिचरणों में गरीबि श्रीखण्डि को धरो ॥

परिक्रमा के मार्ग में जा बैठते और लोटने वालों को मिठाई बाँटते । रास्ते पर झाड़ू लगाते, सत्संगियों से कहते कि परिक्रमा से भी अधिक आनन्द इन महात्माओं के दर्शन में है ।

श्रीराधाकुण्ड श्रीस्वामीजी को बहुत ही प्यारा लगता था । एक बार वहाँ तीन महीने रहे और दूसरी बार एक महीना, वहाँ रहकर श्रीस्वामीजी ने ‘श्रीवैकुण्ठेश्वरवासभवन, नाम की एक पुस्तक भी लिखी है । यह पुस्तक लिखने के लिये स्वप्न में लक्ष्मण प्रिया श्रीउर्मिला देवी ने आदेश दिया था । वहाँ रहते समय एक दिन स्वामीजी कुछ सत्संगियों के साथ बन में गये । वहाँ एक मोती का वृक्ष मिला । बड़े ही सुन्दर मोती के समान फल लगे थे । श्रीस्वामीजी ने और सत्संगियों ने प्रभु का प्रसाद जानकर फल

खाये और निवासस्थान पर ले आये । दूसरे दिन फिर सब सत्संगी  
गये । बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ की; परन्तु उस वृक्ष का कहीं पता ही न  
चला ।